नये नियम के पत्र

कलीसियाओं और अगुवों की शिक्षा के लिए प्रेरितों ने पत्र लिखें

बच्चों के शिक्षकगणों को इस अध्ययनमाला से **L2b** पढ़ना चाहिये

1. परमेश्वर के वचन तथा प्रार्थना द्वारा स्वयं को तैयार कीजिए।

प्रार्थना : ''हे प्रभु यीशु, आप अपने लोगों से प्रेम करते हैं, और आप चाहते हैं कि वे उन पत्रों को जो आपके प्रेरितों ने लिखें, समझें और उनकी बातों का पालन करें, मैं भी उनकी इसमें सहायता करना चाहता हूं। आमीन।''

प्रभु यीशु के पांच चुने हुए प्रेरितों ने विश्वासियों व उनके अगुवाओं को पत्र लिखे जो हमारे लाभ के लिए नए नियम में सुरक्षित हैं।

उन पांच प्रेरितों के नाम इस प्रकार हैं:-याकूब, पतरस, यूहन्ना, यहूदा तथा पौलुस। इन सभी प्रेरितों ने यीशु को देखा था उन्होंने अपनी रचनाएं प्रथम शताब्दी में कीं। उनके पत्रों को पत्रियां भी कहा जाता है।

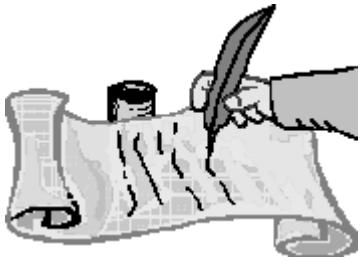

याकूब : यह यीशु मसीह के भाई थे, जो बाद में यीशु के विश्वासी बने। वे येरूशलेम में विश्वासियों की अगुवाई करते थे। उन्होंने याकूब नामक पत्री लिखी जो रोमी साम्राज्य में रहने वाले इस्राएल के 12 तितर-बितर गोत्रों के लिए लिखी गयी। याकूब 1:22 पढ़ें और देखें कि हमें परमेश्वर के वचन के प्रति क्या करना चाहिए, अर्थात् हमें वचन पर चलने वाला बनना चाहिए।

पतरस : पतरस उस समय यीशु का चेला बना था जबकि यीशु ने उसे अपने पीछे चलने की बुलाहट दी थी। हालांकि पतरस ने सार्वजनिक रूप से यीशु को अस्वीकार किया था, तो भी उसने सच्चा पश्चात्ताप् किया था और बाद मे याकूब के साथ मिलकर कलीसिया की येरूशलेम में अगुवाई करने लगा था। उसने 1, 2 पतरस नामक पत्रियां उन मसीही लोगों को लिखीं जो रोमी साम्राज्य में सताव का सामना कर रहे थे और उसने उन्हें प्रोत्साहित किया कि सताव होते हुए भी वे विश्वासग्यो बने रहें। 1 पतरस 5:10 में देखें कि यीशु के लिए सताव सहने वाले लोगों के लिए पतरस के माध्यम से परमेश्वर ने क्या प्रतिज्ञा की है।

यूहन्ना : जब तक यीशु ने यूहन्ना को बुलाहट नहीं दी तब तक वे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शिष्य थे। वह यीशु से अत्याधिक प्रेम करता था, उसने दूसरों को प्रोत्साहित किया कि परमेश्वर से प्रेम रखना चाहिए साथ ही आपस में भी प्रेम करना चाहिए। उसने पहली पत्री सब मसीहियों के लिए लिखी, परन्तु दूसरी और तीसरी पत्री विशेषकर कलीसिया के अगुवों के लिए लिखी। 1 यूहन्ना 1:4 तथा 5:13 पढ़कर ज्ञात करें कि किन दो कारणों से पहला पत्र लिखा गया।

यहूदा : याकूब की तरह ये भी यीशु मसीह के भाई थे और बाद में येरूशलेम की कलीसिया के एक अगुवे बने। उन्होंने यहूदा नामक पत्री झूठे शिक्षकों से सावधान रहने के विषय में लिखी जो विश्वासियों को भटका कर अनैतिकता की ओर उन्हें अग्रसर कर रहे थे। यहूदा 1:3 पढ़ें और देखें कि पत्री लिखने का कारण क्या था।

पौलुस : (तरसुस का शाऊल) पौलुस एक दर्शन देखने के द्वारा यीशु के प्रेरित बने। प्रेरित बनने के बाद प्रभु यीशु ने उन्हें रोमी साम्राज्य के अनेकों नगरों में भेजा जहां गैर-यहूदी लोग रहते थे। नए नियम में उनकी अनेकों पत्रियां जैसे : रोमियों, कुरिन्थियों, गलतियों, इफ़िसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों तथा थिस्सलुनिकियों पाई जाती

हैं। उन्होंने नए अगुवों को भी कुछ पत्रियां लिखीं जैसे-फिलेमोन, तीमुथियुस, तीतुस आदि। संभव है पौलुस ने, इब्रानी यहूदी मसीहियों को प्रोत्साहन के लिए कि वे मसीह यीशु पर विश्वास रखें तथा पुराने नियम के पशु-बलिदानों पर भरोसा न करें, इब्रानियों नामक पत्री भी लिखी। पढ़ें 1 कुरिन्थियों 4:14 और ज्ञात करें कि पौलुस ने कुरिन्थ निवासियों को क्यों पत्र लिखा।

इन प्रेरितों ने अपनी पत्रियां यूनानी भाषा में लिखीं जो उन दिनों सर्वत्र प्रयोग की जाती थीं। उन्होंने अन्य पुस्तकें भी लिखीं जो नया नियम में सम्मिलित नहीं की गई। विश्वासियों ने इन प्रेरितों के पत्रों की नकल बनाई और अन्य विश्वासियों को भेजीं (देखें कुलु. 4:16)

नक्शे में उन स्थानों के नाम देखें जा सकते हैं जहां का भेजे गए।

2. आगामी सप्ताह के लिए गतिविधियों की योजना बनाएं।

- उन लोगों की व कलीसियों की सूची बनाएं जिनको आप मिलने नहीं जा सकते हैं
- आपस में विचार-विमर्श कों कि उन्हें आप से क्या सीखने की आवश्यकता है।
- प्रत्येक ऐसे लोगों के लिए प्रार्थना करें।
- ऐसे लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए पत्र लिखें, जैसाकि पौलुस ने किया था, और पत्र में सब लोग अपने हस्ताक्षर करें।

3. आगामी आराधना की योजना बनाएं

प्रथम भाग में जो पत्रियां लिखने के कारण बताए गये हैं, उन्हें समझाएं। यह भी बताएं कि मसीही लोग जिस प्रकार यीशु की आज्ञाओं का पालन करते हैं, उसी प्रकार प्रेरितों की आज्ञाओं का भी पालन करते हैं

विश्वासी लोग पत्रियों से अपनी पसन्द की आयतें सुनाएं।

बच्चे नाटक या अन्य बात जो उन्होंने तैयार की हो, प्रस्तुत करें

जिन स्थानों के लिए पौलुस ने पत्रियां लिखीं, नक्शे के द्वारा वे स्थान दिखाएं।

पांच युवा बच्चों को नियुक्त करें जो याकूब, पतरस, यूहन्ना, यहूदा और पौलुस का प्रतिनिधित्व करते हुए भाग एक मे लिखी बातों के अनुसार अपना-अपना परिचय दें। परिचय :-

याकूब : ''मैं याकूब हूं, मैं यीशु मसीह का सगा भाई हूं। मैं येरूशलेम की कलीसिया में अध्यक्ष था। मेरा यहूदी लोगों से, जो पुराने नियम की व्यवस्था का पालन करने पर जोर देते थे और नई वाचा के अन्तर्गत प्रभु के अनुग्रह पर विश्वास नहीं रखते थे, निरंतर संघर्ष रहा।

पतरस : ''मैं मछुआरा पतरस हूं। मैंने शीघ्र ही अनुभव कर लिया था कि यीशु में प्रतिज्ञात मसीह की सारी भविष्यवाणियां पूरी होती हैं। मैं कैसरिया में पहली बार अन्य जाति विश्वासियों पर भी पवित्रात्मा उतरते देखा, वह बड़ा अनूठा समय था। तो भी इस घटा ने येरूशलेम के यहूदियों में जटिल प्रश्न खड़ा कर दिया था।''

यूहन्ना : ''मैं यूहन्ना हूं। मैंने पत्र इस कारण लिखा कि सब लोग जान लें कि मेरी गवाही सच्ची है। मैंने यीशु पर कबूतर की नांई पवित्रात्मा उतरते अपनी आंखों से देखा था, जबकि वह बपतिस्मा ले रहा था। साथ मैंने आकाश से भयानक शब्द भी होते हुए सुना था, जिसने घोषणा की थी कि यीशु मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रसन्न हूं। मैंने यीशु को कब्र से जीवित होने के बाद भी देखा था।''

यहूदा : ''मैं यहूदा हूं। मैं यीशु का भाई हूं और उसके साथ गलील में मेरा पालन-पोषण हुआ। जब यीशु ने पहली बार आश्चर्यकर्म किया तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। अन्य नासरत निवासियों की तरह मुझे भी यीशु पर विश्वास करना कठिन जान पड़ा। लेकिन जल्द ही मैंने अनुभव किया कि वह अपने कार्यों व अपने वचनों के कारण परमेश्वर का पुत्र है।

पौलुस : ''मैं पौलुस प्रेरित हूं। मैं एक कट्टर फरीसी था इसलिए यीशु के शिष्यों से घृणा मुझे थी। दमिश्क के मार्ग पर यीशु का दर्शन करने से पूर्व मैं यीशु के शिष्यों को निर्दयता के साथ सताता था। यीशु की महिमा का दर्शन पाने के बाद कुछ दिन तक मैं अन्धा रहा। अब मैं केवल उसी यीशु की सेवा करता हूं।''

प्रभु भोज के लिए पढ़ें 1 यूहन्ना 1:7-10, तथा समझाएं कि प्रभु भोज में भाग लेने से पहले हम सच्चाई के साथ महापवित्र प्रभु के सामने अपने पापों का अंगीकार करते हैं, और यह जानते हैं कि वह हमें यीशु के सामर्थी लहू से शुद्ध करके पापों को हमसे दूर कर देगा।''

कुछ विश्वासी साक्षी दें व स्तुति करें कि किस प्रकार प्रेरितों के पत्रों की शिक्षाओं का पालन करके उन्हें आशीषें मिली हैं

कंठस्थ करें : 1 यूहन्ना 2:12-13

दो या तीन व्यक्तियों के छोटे समूह बनाएं एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें आपस में विचार-विमर्श करें उन बातों को दोहराएं जो प्रेरितों के पत्रों द्वारा सीखी हैं। तब अपनी योजनाओं पर विचार करें और उन्हें अंतिम रूप दें।

Copyright 2004 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net